सेहत बिगाड़ रहे हैं निजी मेडिकल कॉलेज

सरकार ने प्राइवेट मेडिकल कॉलेज देश भर में बना दिए लेकिन कभी इन मेडिकल कॉलेजों से देश के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव का अध्ययन नहीं कराया।

- डॉ. अशोक जैनर, लंदन से

मैं पिछले काफी सालों से समय-समय पर भारत के स्वास्थ्य विभाग व स्वास्थ्य समस्याओं का विश्लेषण करता रहा हूं। मुझे यह देखकर बहुत दुख होता है कि किस प्रकार भारत में प्राइवेट मेडिकल कॉलेज लगातार बढ़ते जा रहे हैं। यह भारत में पैसा कमाने का सबसे अच्छा 'बिजनेश मॉडल' बन गया है। इस मॉडल में केवल मुनाफा ही मुनाफा है, घाटे का सवाल ही नहीं है। किसी भी देश का स्वास्थ्य ही उसकी रीढ़ है। जिस देश की मेडिकल ट्रेनिंग अच्छी होती है वहां अच्छे डॉक्टर बनकर स्वास्थ्य सेवाओं को अपने कन्धों पर जिम्मेदारी के साथ निभाते हैं। किसी भी अस्पताल का चाहे कितना ही अच्छ भवन क्यों न हो यदि उस अस्पताल में डॉक्टर अच्छे नहीं हैं तो वह अस्पताल किसी काम का नहीं होता। अच्छे अस्पताल का आकलन अस्पताल के डाक्टरों से ही किया जा सकता है। एक अच्छा डाक्टर चाहे किसी भी अस्पताल में कार्य करे या फिर वह किसी गांव के अस्पताल में हो वह हमेशा अच्छी स्वास्थ्य सेवा देगा। अच्छा डाक्टर किसी एक देश तक ही सिमित नहीं रहता वह दुनिया के किसी भी देश में अपना हुनर दिखा सकता है। भारत के हजारों डाक्टर दुनिया के दूसरे देशों में कार्य कर रहे हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि भारत के मेडिकल कॉलेज सरकारी होते थे जिसकी वजह से अच्छे डाक्टर बनकर निकलते थे। यहां पर एक बात और महत्वपूर्ण है कि अधिकतर अच्छे मेडिकल कॉलेज हमारे देश में आजादी से पहले अग्रेजों के समय में बनाये गये। तब मेडिकल कॉलेज बनाने तथा चलाने का एक सिस्टम था जिसमें मेडिकल कॉलेजों में प्रवेश का एक पूर्ण पारदर्शी सिस्टम, पढ़ाई का ट्रेनिंग की गुणवत्ता का आकलन करने का सिस्टम तथा गुणवत्ता को आगे बढ़ाने का सिस्टम था। जिसके कारण इन मेडिकल कॉलेजों से दुनियाभर में हमारे डाक्टरों की इज्जत होती थी। हमारे देश के डाक्टर गुणवत्ता में उनके बराबर होते थे। अब यह देखकर बहुत दुख होता है कि एक ओर हमारे पास इतने अच्छे सरकारी मेडिकल कॉलेज थे जो अच्छे डाक्टर पैदा कर रहे थे। फिर अचनाक सरकार ने प्राइवेट मेडिकल कॉलेज का रास्ता खोल दिया। पहले यह दक्षिण भारत में और अब उत्तर भारत में। प्राइवेट मेडिकल कॉलेजों ने गुणवत्ता को एक तरफ रखकर इसे पैसा कमाने की फैक्टरी बना दी। इन मेडिकल कॉलेजों में प्रवेश पाने का एक आधार है पैसा। जिसके पास पैसा है वह डाक्टर बन सकता है। मैं ऐसे डाक्टर को जानता हूं जो कक्षा 12 में दो बार फेल हुए तथा पैसा देकर मेडिकल कॉलेज में प्रवेश ले लिया और अब डाक्टर है। आप स्वयं सोचें ऐसा डाक्टर क्या मरीज के साथ न्याय कर पाएगा। क्या वह अच्छी स्वास्थ्य सेवा दे पायेगा। कोई भी विद्यार्थी आज पैसा देकर प्राइवेट मेडिकल कॉलेज में प्रवेश ले सकता है। अमीर पैसा देकर डाक्टर बनेंगे तथा डाक्टर बनकर उस पैसे को वापस कमाने के लिए मरीजों के साथ मनमानी कर पैसा कमाएंगे।

सरकार ने प्राइवेट मेडिकल कॉलेज देश भर में बना दिए लेकिन क्या कभी सरकार ने इन मेडिकल कॉलेजों से देश के स्वास्थ्य पर आने वाले नकारात्मक प्रभाव का आकलन किया। क्या कभी सरकार ने इन प्राइवेट मेडिकल कॉलेजों की गुणवत्ता तथा इससे निकलने वाले डाक्टरों का आकलन किया। सबसे पहले सरकारी मेडिकल कालेजों में मेडिकल स्टूडेन्ट की सीटें बढ़ाई जाएं। ऐसा करने से डाक्टरों की पढ़ाई व ट्रेनिंग की गुणवत्ता बनी रहगी। इसके साथ-साथ प्राइवेट मेडिकल कालेजों की भागीदारी 10 फीसद से नीचे रहे। प्राइवेट मेडिकल तथा सरकारी मेडिकल कालेज में प्रवेश का आधार एक रहे। इसके साथ-साथ मैनेजमेंट की सीटों को समाप्त किया जाए। सरकार मैनेजमेंट सीटों के लिए इन मेडिकल कॉलेजों को गुणवत्ता, अच्छे डाक्टरों की पढ़ाई तथा ट्रेनिंग के आधार पर सब्सिडी या सहायता दे। इन मेडिकल कॉलेजों के ऊपर सरकार का नियंत्रण रहे। यदि ये मेडिकल कॉलेज अच्छी शिक्षा तथा ट्रेनिंग न दे पाएं तो सरकार इनका 'एड' समाप्त कर दे तथा इनका लाइसेंस निरस्त कर दे। मेडिकल शिक्षा तथा ट्रेनिंग के मानदण्ड निर्धारित हो। सरकारी व प्राइवेट मेडिकल कॉलेज दोनों को एक समान, एक प्रकार की मेडिकल शिक्षा तथा ट्रेनिंग देनी होगी। मेडिकल कॉलेजों में प्रवेश का एक आधार, एक समान शिक्षा, ट्रेनिंग होने पर ही एक जैसे डाक्टर पैदा हो सकेंगे जैसा की दूसरे देशों में होता है।

प्राइवेट मेडिकल कॉलेजों में शिक्षा तथा ट्रेनिंग का नियमित रूप से आकलन हो। इसके साथ-साथ हर साल देश भर के मेडिकल कॉलेजों की रैंक प्रकाशित की जाए। जो मेडिकल कालेज गुणवत्ता के मानदंडों पर खरा न उतरें उनकी मान्यता समाप्त हो। यदि सरकार इस ओर प्रभावी कदम उठाए तथा कुछ प्राइवेट मेडिकल कॉलेजों की मान्यता समाप्त करे तो तेजी से सुधार हो सकता है। दुनिया के सभी विकसित देशों में सभी मेडिकल कॉलेज लगभग एक समान डाक्टर पैदा करते हैं। मरीज उन पर भरोसा करते हैं लेकिन हमारे देश में आज यही नहीं पता किस डाक्टर पर भरोसा करें और किस पर ना करें। मरीज की जिन्दगी कई बार उन डाक्टरों के हाथों में होती है जिन्होंने सही डाक्टरी सीखी ही नहीं क्योंकि वो पैसा देकर प्राइवेट मेडिकल कॉलेजों से डिग्री ले लेते हैं। कुछ प्राइवेट मेडिकल कालेजों के पास डाक्टरी सीखाने के लिए तरह-तरह के मरीज ही नहीं होते। कई प्राइवेट मेडिकल कॉलेजों में पढ़ाने वाला सही स्टॉफ नहीं होता तथा कई प्राइवेट मेडिकल कालेजों के पास सही प्रकार की मशीनें तथा आधुनिक यंत्र भी नहीं होते। फिर भी वो अपनी दुकान चला रहे हैं। उम्मीद है कि इस दिशा में सरकार जल्द नीति तैयार कर पेश करेगी। ■■